बुआई का समय

बुवाई का उपयुक्त समय अप्रैल से मई माह होता है।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 1.5 से 02 किलोग्राम बीजों की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर उपरोक्त दर्शित उपचारण पश्चात् बुवाई करने पर सामान्य अंकुरण से 20 प्रतिशत अधिक अंकुरण प्राप्त होता है।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव

प्रारंभ में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज धूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है एवं किसी भी तरह की बीमारी दिखने पर फफूंदनाशक बैविस्टीन एवं कीटनाशक दवा एन्डोसल्फॉन का 01 प्रतिशत सांद्रता के घोल का छिड़काव समय–समय पर किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसके अतिरिक्त नीम की पत्तियों के घोल को तैयार कर (extract) इसका छिड़काव किया जाना लाभप्रद होता है।

पॉटिंग मिश्रण

पौध की अच्छी वृद्धि के लिए पॉलीथिन में रेत + मिट्टी + केंचुआ खाद को क्रमशः (1:1:2) के अनुपात में लेकर मिश्रण तैयार किया जाना चाहिए।

पॉलीथिन का माप

पौध रोपण हेतु पॉलीथिन का माप 15x25 सेमी होना चाहिए।

उपयोग

लकड़ी जलाऊ लकड़ी के रूप मे एवं फल औषधीय में उपयोग किए जाते है। पेट से संबंधित बीमारी जैसे, भूख न लगना, कब्ज, उल्टी आना, भारीपन, थकावट, आदि बीमारियों के लिए दवाई तैयार करने में आयुर्वेद में इसका उपयोग किया जाता है। परंतु आयुर्वेद में गर्भवती स्त्रियों को इसका सेवन निषेध है। इसके साथ ही इसके फलों का उपयोग डायरिया, बुखार, खांसी, अस्थमा, पेशाब संबंधित बीमारी और पेट के कीडों से होने वाले तकलीफ की औषधि तैयार करने में भी किया जाता है। इसमें पाया जाने वाला मायरोबैलन का उपयोग लैदर सोल तैयार करने में, किताबों की लैदर बाइंडिंग, आदि में किया जाता है।

संपर्क :

डॉ. अर्चना शर्मा

वरि. वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

फोन: (0761) 2666529, 2665540

Amrit Offset # 0761-2413943

(48)

हर्रा

बीज एवं रोपणी तकनीक

(टरमेनेलिया चिबुला)

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

हर्रा - बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम - हर्रा
वानस्पतिक नाम - टरमेनेलिया चिबुला

परिचय

यह कॉम्ब्रिटेशी कुल का वृक्ष है। इसे हरड के नाम से भी जाना जाता है। हर्रा को वैद्यों ने चिकित्सा साहित्य में अत्यधिक सम्मान देते हुए उसे अमृतोपम औषधि कहा है। हरीतकी मनुष्यों की माता के समान हित करने वाली है। माता तो कभी कभी कुपित भी हो जाती है, परन्तु उदर स्थिति अर्थात् खायी हुई हरड़ कभी भी अपकारी नहीं होती।

पहचान

मध्यम आकार का अधिकतम ऊँचाई 30 मीटर वाला वृक्ष है। यह वृक्ष गहरे भूरे रंग की छाल के साथ साथ उस पर पाये जाने वाले काष्ठीय कांटे एवं पत्रक के ऊपर की तरफ जोडे में पाये जाने वाली ग्रंथियों के कारण पहचाना जाता है।

प्राप्ति स्थान

यह भारत के लगभग सभी भाग में पाया जाता है इसके साथ–साथ यह प.बंगाल असम एवं दक्कन पठार पर पाया जाता है। म.प्र. एवं छ.ग. में यह सिवनी, सरगुजा, कोरबा, मण्डला, जबलपुर, बैतूल आदि जिलों में पाया जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

यह ज्यादातर लेटेराइट, रेतीली दोमट, काली कपासी एवं विभिन्न प्रकार की मृदा में पाया जाता है, जिसमें अधिक से अधिक जल धारण क्षमता होती है। यह प्रकाशपेक्षी एवं पाले के प्रति संवेदनशील परंतु शुष्क प्रतिरोधी वृक्ष है। यह लगभग 40 से 120 इंच वार्षिक औसत वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी वृद्धि करता है।

बीज चक्र

बीज उत्पादन प्रतिवर्ष होता है। परंतु एक वर्ष के अंतराल पर बीज का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

वृक्ष में मई से जून के मध्य फूल आते है। वृक्ष में नवम्बर से जनवरी माह के मध्य फल लगते हैं एवं फरवरी से मार्च में पककर तैयार होते हैं। इसके फल अण्डाकार एवं 2.6 से 3.0 सेमी. लंबे होते हैं।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीज संख्या 290 से 320 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

सामान्य भण्डारण में बीज की जीवन क्षमता अवधि 09 से 12 माह होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में किसी भी प्रकार की सुसुप्तावस्था नहीं पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

अनुपचारित बीज में अंकुरण क्षमता 40 से 50 प्रतिशत तक पायी जाती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशत 35 से 40 प्रतिशत तक प्राप्त होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

सील्ड प्लास्टिक बैग में अथवा कम तापमान **(4°C)** पर भण्डारित करने पर जीवन क्षमता अवधि 1.5 से 02 वर्ष तक बनी रहती है।

उपयोगिता की अवधि

बीज संग्रहण के पश्चात् 03 से 18 माह के अंदर उपयोग में लिया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बुवाई के पूर्व 40% सांद्रता के सल्फ्यूरिक अम्ल के साथ 10 मिनिट तक डुबोकर रखने पर बीज में अंकुरण 60 से 70 प्रतिशत तक प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

महीन छनी हुई रेत का उपयोग अंकुरण हेतु किया जाना चाहिए।